श्री यमुनाजी के ४१ पद

१

पिय संग रंग भरि करि कलोले,
सबन कों सुख देन, पिय संग करत सेन;
चित्त मे तब परत चेन, जबही बोले.
अतिहि विख्यात, सब बात इनके हाथ,
नाम लेत ही कृपा करी अतोले;
दरस कर परस कर ध्यान हिय मे धरे,
सदा व्रजनाथ इन संग डोले.
अतिही सुख करन दुख सबन के हरन,
यही लीनो परन, दे जु कोले;
ऐसी श्री यमुने जान, तुम करो गुणगान,
'रसिक' प्रीतम पाये, नग अमोले.

२

श्याम सुखधाम जहां नाम इनके,
निशदिना प्राणपति, आय हिय मे बसे;
जोई गावे सुजस भाग्य तिनके.
यही जग मे सार कहत वारंवार,
सबन के आधार, धन निर्धनन के;
लेत श्री यमुने नाम, देत अभय पद दान,
'रसिक' प्रीतम -पिया बस जु इनके..

३

कहत श्रुति सार निर्धार करके,
इन बिना कौन, ऐसी करे हे सखी,

हरत दुख द्वन्द सुखकन्द बरखे,
ब्रह्मसम्बन्ध जब होत या जीव को
तब ही इनकी भुजा वाम फरके;
दोरकर सोर कर जाय पिय सो कहे
अतिही आनंद मन मे जु हरखे.
नाम निरमोल नग ले कोउ ना सके
भक्त राखत हिये हार करके;
'रसिक' प्रीतमजू की होत जा पर कृपा
सोई श्री यमुनाजी को रुप परखे.

४

नेन भर देख, अब भानु तनया,
केलि पिय सो करे, भ्रमर तब हि परे ;
श्रमजल भरत, आनंद मनया,

चलत टेढी होय, लेत पिय को मोहि,
इन बिना रहत नही एक छिनया;
'रसिक'प्रितम रास, करत श्री यमुना पास,
मानो निर्धनन कि हे जु धनया .

५

स्याम संग स्याम , वे रही श्री यमुने,
सुरत श्रम बिंदुते, सिन्धु सी बही चली;
मानो आतुर अली ,रही न भवने,
कोटि कामही वारो ,रुप नैनन निहारो
लाल गिरिधरन, संग करत रमने,
हरखि 'गोविंद'प्रभु निरखी इनकी ओर,
मानो नव दुल्हनि आई गोने.

६

चरण पंकज रेणु श्री यमुने जु देनी,
कलियुग जीव उधारन कारन;
काटत पाप अब धार पेनी.
प्राणपति प्राण-सुत, आये भक्तन हित,
सकल सुख कि तुम हो जु श्रेनी;
'गोविंद'प्रभु बिना रहत नहिं एक छिनु,
अति ही आतुर चंचल जु नैनी.

७

श्री यमुनासी नाही कोई और दाता,
जो इनकी शरण जात है दोरके;

ताहिको तिहि छिनु कर सनाथा.
येहि गुणगान रसखान रसना एक,
सहस्त्र रसना क्यों न दई विधाता;
'गोविंद'प्रभु तन, मन , धन वारने,
सबहीको जीवन इनही के जु हाथा.

८

श्री यमुना जस जगत मे जोई गावे,
ताके आधीन व्हे रहत है प्राणपति;
नेन अरु बेनमे रस जु छावे.
वेद पुराण ते बात यह अगम है,
प्रेम को भेद कोउ न पावे;
कहत 'गोविंद'श्री यमुने कि जा पर कृपा
सोई श्रीवल्लभ कुल शरण आवे.

९

धाय के जाय जो श्री यमुना तीरे,
ताकी महिमा अब कहां लग बरनिये;
जाय परसत अंग प्रेम-नीरे.
निशदिना केली करत मनमोहन,
पिया संग भक्तन की हे जु भीरे;
'छितस्वामी'गिरिधरन श्री विट्ठल,
इन बिना नेक नही धरत धीरे.

१०

जा मुखते श्री यमुने यह नाम आवे,
ता पर कृपा करे श्री वल्लभ प्रभु;

सोई श्री यमुनाजी को भेद पावे.
तन, मन, धन सब लाल गिरिधरनको
देके चरण जब चित्त लावे;
'छितस्वामी'गिरिधरन श्री विट्ठल
नैनन प्रगट लीला दिखावे.

११

धन्य श्री यमुने निधि देनहारी
करत गुणगान, अज्ञान -अघ दूर करी;
जाय मिलवत पिय प्राण प्यारी.
जिन कोउ संदेह करो बात चित्तमे धरो
पुष्टि पथ अनुसरो सुख जु कारी;
प्रेम के पुंज मे रास रस कुंजमे
ताही राखत रस रंग भारी.

श्री यमुने अरु प्राणपति, प्राण अरु प्राण सुत,
चहु जन जीव पर दया विचारी.
'छितस्वामी'गिरिधरन श्री विठ्ठल,
प्रीत के लिये अब संग धारी.

१२

गुण अपार मुख एक, कहालों कहिये,
तजो साधन भजो नाम श्री यमुनाजीको;
लाल गिरिधरनवर तबही पैये.
परम पुनीत प्रीतकी रीत सब जानके,
द्रढ करी चरण कमल जु ग्रहीये;
'छितस्वामी'गिरिधरन श्री विठ्ठल,
ऐसी निधि छांड अब कहां जु जैये.

१३

चित्त मे श्री यमुना निशदिन जु राखो
भक्त के वश, कृपा करत है सर्वदा;
ऐसो श्री यमुनाजीको है साखो.
जा मुख ते श्री यमुने यह नाम आवे,
संग किजे अब जाय ताको;
'चत्रभुजदास' अब कहत है सबनसों,
ताते श्री यमुने श्री यमुने जु भाखो.

१४

प्राणपति विहरत श्री यमुना कूले,
लुब्ध मकरंद के, भ्रमर ज्यों बस भये;

देख रवि उदय, मानो कमल फूले.

करत गुंजार मुरली जू ले सांवरो,
सुनत व्रजवधू, तन सुध जू भूले;
'चत्रभुजदास' यमुने प्रेम सिन्धुमे,
लाल गिरिधरन वर अब हरखि झूले.

१५

वारंवार श्री यमुने गुणगान कीजे,
येहि रसनाते भजो नाम-रस-अमृत;
भाग्य जाके हे सोई जू पीजे.
भानु-तनया दया अतिही करुणामया
इनकी कर आश, अब सदा ही जीजे;
'चत्रभुजदास' कहे, सोई प्रिय पास रहे,

जोई श्री यमुनाजीके रस जू भीजे.

१६

हेत करी देत श्री यमुने वास कुंजे,
जहां निशवासर रास में रसिकवर;
कहांलो बरनिये प्रेम पुंजे.
थकित सरिता-नीर थकित व्रजवधू भीर,
कोऊ न धरत धीर, मुरली सुनीजे.
'चत्रभुजदास' यमुने पंकज जानि,
मधुपकी नांई चित्त लाय गुंजे.

१७

भक्त पर करि कृपा श्री यमुने जू ऐसी,

छांड निज धाम विश्राम भूतल कियो;
प्रकट लीला दिखाई जू तैसी.
परम परमारथ करत है सबनको,
देत अद्भुत रुप आप जैसी;
' नंददास' यो जानी द्रढ करी चरण ग्रहे,
एक रसना कहा कहो विसेखि.

१८

नेह कारण श्री यमुने जू प्रथम आई,
भक्त के चित्त कि वृत्ति सब जानके;
तहांते अतिही आतुर जू धाई.
जाके मन जैसी इच्छा हति ताहीकि,
तैसीही आय साध जू पूजाई,
'नंददास'' प्रभु ता पर रीझि रहे ,

जोई श्री यमुनाजी को जश जू गाई.

१९

ताते श्री यमुने यमुने जू गाओ,
शेष सहस्त्रमुख निश दिन गावत;
पार नहिं पावत ताही पाओ.
सकल सुख देनहार ताते करो उच्चार,
कहत हो वारंवार जिन भुलाओ;
'नंददास'की आस श्री यमुने पूरन करी,
ताते घरी घरी चित्त लाओ.

२०

भाग्य सौभाग्य श्री यमुने जू देई,

बात लौकिक तजो, पुष्टि यमुने भजो;
लाल गिरिधरनवर तब ही मिलेई.

भगवदीय संग कर बात इनकी लहे,
सदा सान्निध्य रहे केलि मेई;
'नंददास ' जा पर कृपा श्री वल्लभ करे,
ताको श्री यमुने सर्वस्व जू देई.

२१

नाम महिमा ऐसी जू जानो,
मर्यादादिक कहे, लौकिक सुख लहे;
पुष्टि को पुष्टि पथ निश्चय जू मानो.
स्वाति जल बूंद जब परत है जाहि मे,
ताहिमे होत तैसो जू बानो;

श्री यमुने कृपासिन्धु जानि स्वाति जल बहुमानि,
'सूर'गुण पूर, कहांलो बखानों.

२२

भक्तको सुगम, श्री यमुने अगम ओरें,
प्रात:ही नहात, अघ जात ताके सकल;
यम हूं रहत ताहि हाथ जोरे.
अनुभवि बिना अनुभव कहा जानही,
जाको पिया नही चित्त चोरे;
प्रेमके सिन्धुको मरम जान्यो नही,
'सुर'कहे, कहा भयो देह बोरे.

२३

फल फलित होय फलरूप जाने,
देखीहूं ना सुनी, ताहीकी आपुनी;
काहुंकी बात कोऊ कैसे जु माने.
ताके हाथ निरमोल नग दीजिये,
जोई नीके करि परखि जाने;
'सुर'कहे क्रूरतें दूर बसीये सदा,
श्री यमुनाजी को नाम लीजे जू छाने.

२४

श्री यमुने पति दास के चिन्ह न्यारे,
भगवदीय कों भगवत्संग मिली रहत है;
जाके हिये बसत प्राण प्यारे.

गूढ श्री यमुने बात सोई अब जानही,
जाके मनमोहन नैन तारे;
'सूर'सुखसार निरधार वे पावही,
जा पर होय श्री वल्लभ कृपा रे.

२५

श्री यमुने रसखानको शीष नांऊ,
ऐसी महिमा जान, भक्तको सुखदान;
जोइ मांगो सोई जू पाऊ.
पतित पावन करन, नाम लीनो तरन,
द्रढ कर गहि चरण, कहुं न जाऊ;
'कुंभनदास' लाल गिरिधरन मुख निरखत,
यही चाहत, नही पलक लाऊ.

२६

श्री यमुने अगनित गुण गिने न जाई,
यमुने तट रेणु तें होत है नवीन तनु;
इनके सुख देनकी, कहा करों बडाई.
भक्त मांगत जोई, देत है तिहि छिनु,
सो ऐसी को, करे प्रण निवाई;
'कुंभनदास'लाल गिरिधरन मुख निरखत,
कहो कैसे करि मन अघाई.

२७

श्री यमुने पर तन, मन, धन प्राण वारों,
जाकी कीर्ति विसद, कौन अब कही सके,
ताहि नैननतें न नेक टारों.

चरणकमल इनके जू चिंतत रहो,
निशदिना नाम मुख तें उच्चारो
'कुंभनदास' कहे, लाल गिरिधरन मुख,
इनकी कृपा भई तब निहारो.

२८

भक्त इच्छा पूरन श्री यमुने जु करता,
बिना मांगे हु देत, कहां लो कहे हेत;
जैसे काहुको कौऊ होय धरता.
श्री यमुना पुलिन रास, व्रज वधू लिये पास,
मंद मंद हास कर मन जू हरता;
'कुंभनदास'लाल गिरिधरन मुख निरखत,
यही जिय लेखत श्री यमुने जू भरता.

२९

रास रस सागर श्री यमुने जू जानी,
बहत धारा तन प्रति छिन नौतन;
राखत अपने उरमें जू ठानी.
भक्त को सहे भार, देत जू प्राण आधार,
अतिही बोलत मधुर मधुर बानी;
'श्री विठ्ठल' गिरिधरन वर बस किये,
कौन पे जात महिमा बखानी.

३०

भक्त प्रतिपाल, जंजाल टारे,
अपने रस रंग मे, संग राखत सदा;
सर्वदा जोइ श्री यमुने नाम उच्चारे.

इनकी कृपा अब कहां लग बरनिये,
जैसे राखत जननी पुत्र बारे;
'श्री विठ्ठल ' गिरिधरन संग विहरत,
भक्त को एक छिनु ना बिसारे.

३१

कोन पें जात श्री यमुने जू बरनी,
सबही को मन मोहत मोहन;
सो पियाको मन हे जू हरनी.
इन बिना एक छिन, रहत नही जीवन धन,
ब्रजचंद मन आनंद करनी;
'श्रीविठ्ठल' गिरिधरन संग आय,
भक्त के हेत अवतार धरनी.

३२

श्री यमुनाजीको नाम ले सोई सुहागी,
इनके स्वरूपको सदा चिंतन करत;
कल न परत, जाय लेह लागी.
पुष्टि मारग मरम, अतिहि दुर्लभ,
करम छांड सगरे, परम प्रेम पागी;
'श्री विठ्ठल' गिरिधरन, ऐसी निधि,
भक्तकों देत है बिना मांगी.

३३

श्री यमुना के नाम अघ दूर भाजे,
जिन के गुण सुननकों लाल गिरिधरन पिय;
आय सन्मुख ताके बिराजे.

तिहि छिनु काज ताके सगरे सरे,
जाय के मिलत व्रजवधू समाजे;
'कृष्णदासनि'कहे ताहि अब कोन डर,
जाके ऊपर श्री यमुने सी गाजे.

३४

श्री यमुनाजी को नाम तेई जू लेहें,
जाकी लगन लगी नंदलाल सों;
सर्वस्व देकें निकट रहे हैं.
 जिनहीं सुगम जानि, बात मनमें जू मानि,
बिना पेहचानि कैसे जू पैये;
'कृष्णदासनि' कहे श्री यमुने नाम नौका,
भक्त भव सिन्धु तें योहिं तरिये.

३५

श्री यमुने तुमसी एक हो जु तुमही,
करी कृपा दरस निसवासर दीजिये;
तिहारे गुणगान कों रहे उधम ही.
तिहारे पायेंते, सकल निधि पावही,
चरण कमल चित्त भ्रमर भ्रमही ;
'कृष्णदासनि'कहे, कौन यह तप कियो,
तिहारे ढिंग रहत है लता द्रुमही.

३६

ऐसी कृपा कीजिये लीजिये नाम,
श्री यमुने जग वंदनी, गुण न जात काहू गिनी;
जिनके ऐसे धनी सुंदर श्याम.

देत संयोग रस ऐसे पियु हे जु बस,
सुनत तिहारो सुजश, पूरे सब काम;
'कृष्णदासनि'कहे भक्त हित कारने,
श्री यमुने एक छिनु नही करे विश्राम.

३७

श्री यमुने के साथ अब फिरत है नाथ,
भक्तके मनके, मनोरथ पूरन करत;
कहां लो कहीये इनकी जू गाथ.
विविध श्रृंगार आभूषण पहरे,
अंग अंग शोभा, बरनी न जात;
'दास परमानंद'पाये अब ब्रजचंद,
राखे अपने शरण, बहे जू जात.

३८

श्री यमुने की आश अब करत है दास,
मन-कर्म-वचन कर जोरि के मांगत;
निशदिना राखिये, अपने जू पास.
जहां पिय रसिकवर, रसिकनि राधिका,
दोउ जन, संग मिल करत है रास;
' दास परमानंद'पाये अब ब्रजचंद,
देखि सिराने, नेन मंद हास.

३९

श्री यमुने पियकों, बस तुम जू कीने,
प्रेम के फंदते, ग्रहि जु राखे निकट;
ऐसे निरमोल, नग मोल लीने.

तुम जू पठावत, तहां अब धावत सदा,
तिहारे रस रंगमें, रहत भीने;
दास 'परमानंद' पाये अब ब्रजचंद,
परम उदार श्री यमुने जू दीने.

४०

श्री यमुने सुखकारनी प्राणपतिके
जिन्हे भूली जात पिय, तिन्हे सुधि करि देत;
कहां लों कहिये इनके जू हितके.
पिय संग गान करे उमगी ज्यों रस भरे,
देत तारी कर लेत झटके;
दास 'परमानंद' पाये अब व्रजचंद ,
येहि जानत सब प्रेम गतिके.

४१

शरण प्रतिपाल गोपाल रति वर्धिनी ,
देत पति पंथ, प्रिय कंथ सन्मुख करत;
अतुल करुणामयी नाथ अंग अर्धिनी.
दीन जन जान रस पुंज कुंजेश्वरी
रमत रस रास , पिय संगनिश-शरदनी;
भक्तिदायक सकल भवसिंधु तारिणी,
करत विध्वंस जन अखिल अघ मर्दिनी.
रहत नंद सूनु तट निकट निशदिन सदा
गोप गोपी रमत मध्य रसकंदनी;
कृष्ण तन वर्ण, गुण धर्म श्री कृष्णके,
कृष्ण लीला मयी, कृष्ण सुख कंदनी;
पद्मजा पाय, तू संग ही मुररिपु,

सकल सामर्थ्यमयी, पाप की खंडनी;
कृपा रस पूर, वैकुंठ पद कि सीढी,
जगत विख्यात, शिव शेष शिर मंडनी.
पर्योपद कमल तर, और सब छांड के
देख दृग कर दया, हास्य मुख मंदनी;
उभय कर जोर 'कृष्णदास' विंनंति करे
करो अब कृपा कलिन्द गिरि नंदिनी.
